9

पूर्व प्राथमिक स्तर पर कार्य पत्रिकाओं का प्रयोग एक प्रयास

पद्मा यादव*

पढ़ना सीखने में अनेक कौशलों का समावेश है, जैसे—अपने निकट पर्यावरण में उपलब्ध वस्तुओं एवं व्यक्तियों के विषय में बात कर पाना, ध्यानपूर्वक सुनकर ध्वनियों को पहचानना एवं शब्दों के अर्थ समझ पाना, अवलोकन कर चित्रों में दी गई जानकारी के साथ संबंध स्थापित करना आदि। इन सभी कौशलों के प्रयोग के लिए बच्चों को अनेक अवसर प्रदान करने की आवश्यकता है। इस हेतु अभीष्ट रुचियों, प्रवृत्तियों, शब्द भंडार एवं पठनपूर्वक आवश्यक कौशलों का विकास भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। बच्चों को विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से खेल-खेल में पढ़ना-लिखना सिखा सकते हैं। कार्य पत्रिकाओं (वर्कशीट) के माध्यम से भी पढ़ना-लिखना सिखाना या अक्षर बोध कराना आसान हो जाता है। शिक्षकों को समय-समय पर स्वयं वर्कशीट बनाकर बच्चों को देनी चाहिए। इससे बच्चों को रंग भरना, चित्र को देखकर उसके बारे में विचार करना, शब्द भंडार विकसित होना, अक्षर का आकार बनाना आदि का अवसर तो मिलता ही है, साथ ही कुछ समय अकेले काम करने का मौका भी मिलता है। बच्चा कितना सीख पाया है, इसका अनुमान भी शिक्षक वर्कशीट द्वारा लगा सकते हैं। इस लेख में वर्कशीट्स की उपयोगिता के बारे में चर्चा की गई है तथा साथ ही कुछ वर्कशीट्स भी उदाहरणार्थ दी गई हैं, जो शिक्षकों एवं अभिभावकों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं।

जब बच्चों को स्कूल में दाखिल करवाते हैं, तो मुख्य उद्देश्य यह होता है कि बच्चा हर वह ज्ञान प्राप्त करे, जो उसके आगे बढ़ने और सफल जीवन के लिए ज़रूरी है और जो उसमें आत्मविश्वास पैदा करे। 3 से 6 वर्ष के बच्चों के लिए स्कूल में कई शिक्षण गतिविधियाँ होती हैं। इन सभी गतिविधियों का उद्देश्य बच्चों में शैक्षिक कुशलता और उनके व्यक्तित्व का विकास करना होता है। शिक्षा, अकादमिक सफलता के लिए महत्वपूर्ण है, लेकिन इतना ध्यान रखना चाहिए कि स्कूली शिक्षा बच्चे को हर तरह से योग्य एवं परिपूर्ण बनाने वाली हो। बच्चों पर पढ़ाई से संबंधित कोई भी गतिविधि लादनी नहीं चाहिए,

*प्रोफ़ेसर, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली 110016

बल्कि उन्हें बिना कोई दबाव दिए गतिविधियों को खेल-खेल में करवाना चाहिए।

पढ़ने के लिए पूर्वापेक्षित कौशल हैं — सुन कर ध्वनि में भेद कर पाना, देखकर आकारों में भेद कर पाना और जो देखा गया है, उसमें संबंध स्थापित करना। साथ ही दिशाबोध यानि बाएँ से दाएँ दिशा की ओर गतिविधियाँ करना जोकि आगे चलकर पढ़ने-लिखने में सहायक होती हैं। पूर्व प्राथमिक स्तर पर बच्चों को पढ़ने के लिए तैयार करते समय इन कौशलों का विकास करने हेतु अनेकानेक क्रियाएँ करवाने की आवश्यकता है। पूर्व प्राथमिक स्तर पर औपचारिक रूप से पढ़ना-लिखना सिखाना वांछनीय नहीं है। इस अवस्था में वर्णों और मात्रायुक्त अक्षरों को देखकर बच्चों के लिए अंतर कर पाना या अक्षरों को अनुभव करने में जो सूक्ष्म भिन्नता होती है, उनकी पहचान करने में या उसे समझने में भी उन्हें कठिनाई होती है। अत: शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे बच्चों को अधिक ग्रहणशील एवं सीखने के लिए सक्षम बनाएँ। उन्हें सामान्य रूप से सीखने के लिए तैयार करें, जिससे वे नियत उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए तैयार हो पाएँ और अधिगम बच्चों के लिए एक सुखद अनुभव हो सके।

पढ़ना, लिखित या मुद्रित रूप में निहित अर्थ को पूर्व-प्राप्त जानकारी से जोड़ते हुए समझने की प्रक्रिया है। 4 से 5 साल के बच्चे, कहानी सुनते हुए और चित्रात्मक पुस्तकों को देखते हुए अनेक खुशियों भरे पल बिताते हैं, ये पल पढ़ने की प्रक्रिया में सहायक होते हैं। पढ़ना सीखने में अनेक कौशलों का समावेश होता है, जैसे — बोलना, सुनना, जानकारी को समझना और आत्मसात करना, एकाग्रता, चित्रात्मक जानकारी से अर्थ ग्रहण करना इत्यादि। पढ़ने में दक्षता लाने में ये सभी कौशल आवश्यक हैं और बच्चों को इनके विकास के लिए अनेक अवसर प्रदान कराने चाहिए। गति से पढ़ने के लिए बच्चों के लिए इन सभी कौशलों में दक्षता हासिल करना आवश्यक है। इसके लिए आवश्यक है वांछित रुचियों, प्रवृत्तियों, शब्द-भंडार का विकास करना, साथ ही श्रवण-विभेद (ध्वनियों को पहचानना और उनमें सूक्ष्म अंतर कर पाना), दृश्य विभेद (देखी गई वस्तु या आकार में भेद कर पाना) तथा श्रव्य एवं दृश्य (जो सुना गया है और देखा गया है) में समन्वय स्थापित कर पाना।

बोलने और सुनने के कौशल के विकास में वार्तालाप एक महत्वपूर्ण एवं स्वाभाविक क्रिया है। इससे शब्द-भंडार एवं भाषा की संरचना विकसित करने में भी सहायता मिलती है। वार्तालाप बच्चों की भाषा पर पकड़ मज़बूत करने में, उन्हें कल्पनाशील बनाने में और उनकी स्वतंत्र अभिव्यक्ति में भी सहायक होती है। अत: बच्चों को ध्यान से सुनने और बोलने के लिए प्रेरित करना चाहिए। ध्वनि विभेदकरण कौशल विकसित करने के लिए कुछ उदाहरण इस प्रकार हो सकते हैं, जैसे —

- बच्चों को समान ध्वनि से आंरभ होने वाली वस्तुओं को ढूँढ़ने के लिए कहा जा सकता है, जैसे — गेंद, गमला, बिल्ली, बंदर, मछली, मटर, कौवा, कबूतर आदि। बच्चों से पूछ सकते हैं कि उन्हें कौवा, कबूतर, कछुआ के आंरभ में कौन-सी ध्वनि सुनाई देती है और इसके साथ-साथ 'क' ध्वनि का परिचय कराया जा

सकता है। बच्चों को वर्कशीट बनाकर दे सकते हैं। उदाहरण के लिए, दी गयी वर्कशीट में बच्चों से चित्रों की पहचान करवाएँ तथा उनके नाम बुलवाएँ। चित्रों के नाम की प्रथम ध्वनि से बच्चों को परिचित करवाएँ तथा उसी ध्वनि से आरंभ होने वाले अन्य शब्द बुलवाएँ। बच्चों द्वारा ध्वनि के शुद्ध उच्चारण पर विशेष बल दें। इसी तरह अन्य ध्वनि से शब्द बनाने को कहा जा सकता है, जैसे — बिल्ली, लट्टू, टमाटर, रस्सी आदि।

- शिक्षिका कोई एक वर्ण बोलकर, जैसे 'म' से आंरभ होने वाली वस्तुओं को या उनके चित्रों को ढूँढ़ने के लिए कह सकती हैं। इसी तरह के खेल बच्चों के साथ खेले जा सकते हैं, इससे शब्द-भंडार बढ़ता है।
- बच्चों को वस्तु के चित्र एवं नाम लिखे हुए कार्ड दें। कुछ अन्य कार्ड भी दें जिनमें नाम अन्य ढंग से लिखा हुआ हो। उदाहरणार्थ — अलग आकार, अलग रूप, अलग वर्तनी में लिखा हुआ हो। इन कार्डों को दिखा कर पूछें कि समान शब्द कहाँ लिखे हैं।
- इस तरह की क्रियाओं को कराते समय बच्चों को लिखित प्रतीकों का ध्वनियों से साहचर्य स्थापित करना सिखाएँ। किसी भी क्रिया को बाईं से दाईं ओर करने के लिए प्रोत्साहित करें। इससे पढ़ने और लिखने के समय कहाँ से शुरू करना है, इसकी जानकारी बनी रहती है। वस्तुओं को, शैली एवं नमूने के अनुसार रखने की क्रियाओं से दिशा क्रम समझने और निर्धारित करने में मदद मिलती है।
- शिक्षक स्वयं कार्यपत्रकों (वर्कशीट) की संकल्पना कर बच्चों में अक्षर बोध विकसित कर सकते हैं। वर्कशीट बच्चों को पठनपूर्व तैयारी कराने में सहायक सिद्ध हो सकती है। इनका प्रयोग शिक्षकों के साथ-साथ अभिभावकों द्वारा भी किया जा सकता है।
- अक्षर बोध कराने या पढ़ाने की तैयारी के लिए बनाई गई इन वर्कशीट्स को विकसित करने का प्रमुख उद्देश्य है, 4–5 वर्ष के बच्चों को अक्षरों का बोध कराना तथा उन्हें पढ़ने के लिए तैयार करना।
- बच्चों को पहले एक ध्वनि से परिचित कराएँ उसके बाद ध्वनि से संबंधित शब्द-भंडार का विकास करवाएँ। अक्षर की आकृति और साथ ही बनावट के साथ ध्वनि का संबंध स्थापित करवाएँ। शब्द-भंडार बढ़ाने के लिए वर्कशीट के अतिरिक्त निकट वातावरण में उपस्थित विभिन्न विषयों, जैसे — जानवर, फल, सब्ज़ियाँ, त्योहार से संबंधित शब्द-भंडार विकसित करें तथा संज्ञानात्मक विकास हेतु अन्य क्रियाएँ भी करवाएँ।
- कार्य पत्रिकाएँ अक्षरों का बोध विकसित करने एवं अभ्यास के लिए अवसर प्रदान तो करती ही हैं, साथ ही वस्तुओं के चित्र, उनके नाम और संबंधित ध्वनियों में तालमेल स्थापित करने और भविष्य में पढ़ने के लिए आवश्यक चित्र या वस्तुओं के नाम से संबंधित ध्वनियों में तादात्म्य स्थापित करने में मदद भी करेंगी।

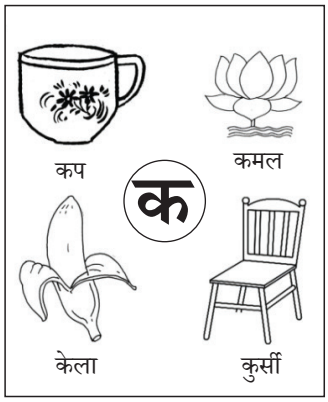

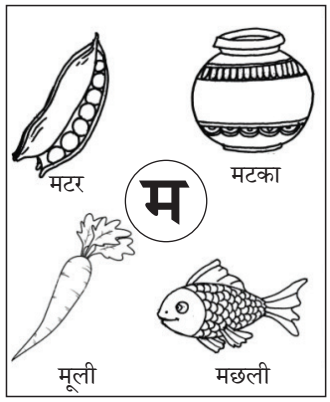

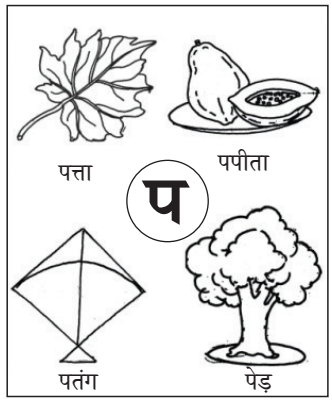

- बच्चों को पहले एक ध्वनि से परिचित कराएँ।
- ध्वनि से संबंधित शब्द-भंडार का विकास करवाएँ।
- अक्षर की आकृति और बनावट के साथ ध्वनि का संबंध स्थापित करवाएँ।
- शब्द-भंडार बढ़ाने के लिए वर्कशीट के अतिरिक्त निकट वातावरण में उपस्थित वस्तुओं के नाम एवं अन्य विवरण से परिचित करवाएँ।

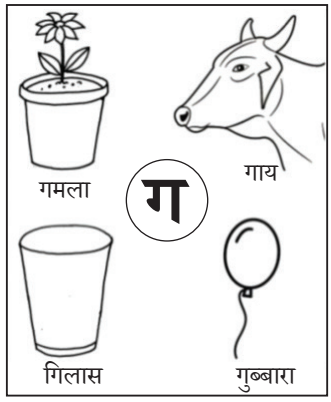

- यह आवश्यक है कि बच्चे दी गई क्रियाओं के लिए शारीरिक और मानसिक रूप से तैयार हों। बच्चों पर किसी प्रकार का दबाव न डालें।
- आरंभ में बच्चे को सुनने एवं बोलने की अनेक क्रियाएँ करवानी चाहिए। सुनने एवं बोलने के विकास के लिए वार्तालाप एक महत्वपूर्ण स्वाभाविक क्रिया है। इससे शब्द-भंडार एवं बोलने की शैली के विकास में मदद मिलती है। शब्द-भंडार में वृद्धि बच्चों के भाषा विकास में सहायक होती है और उन्हें अभिव्यक्ति में सक्षम बनाती है।

अत: बच्चों को ध्यानपूर्वक सुनने एवं बोलने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। वहीं, पठन-पूर्व तैयारी के लिए चित्र पठन भी एक बहुत अच्छी क्रिया है।

- लिखने और पढ़ने की क्रियाएँ साथ-साथ चलनी चाहिए। अत: बच्चों को रंग भरना, गोला लगाना, चित्र चिपकाना, आकार बनाना आदि अवसर दिए जाने चाहिए। रंग भरना, गोला लगाना, चित्र चिपकाना और आकार बनाने के लिए क्रेयॉन (मोमी कलर्स) देने चाहिए। पेंसिल का प्रयोग उपयुक्त नहीं होगा, क्योंकि इस आयु में बच्चों की अँगुलियों की माँस-पेशियाँ पूर्ण रूप से विकसित नहीं हो पाती हैं।

नीचे दी गयी वर्कशीट में बच्चों से पतंग का चित्र बनवाइए और उसमें रंग भरवाइए। बच्चों को पतंग का चित्र दीजिए और उन्हें चिपकाने के लिए कहें। इसी तरह दूसरी वर्कशीट में गमले का चित्र बनवाइए और उसमें रंग भरवाइए। गमले का चित्र दीजिए और बच्चों को चिपकाने के लिए कहें। बच्चों को मटका सजाने के लिए कहें। साथ ही बच्चों को प्रथम ध्वनि से परिचित कराएँ, अक्षर के आकार से परिचित कराएँ और बिंदु से बिंदु मिला कर अक्षर बनवाएँ। फिर अपने आप अक्षर लिखने के अवसर दें। बच्चे चाहें तो कागज़ पर लिखें, चाहे मिट्टी में लिखें, आटे में लिखें, अखबार में अक्षर ढूढ़ें आदि।

- पढ़ने के लिए अक्षरों का बोध आवश्यक है। कोशिश करें कि बच्चे अक्षरों के आकार को पहचानें, उन्हें लिखने के लिए जिन रेखाओं की आवश्यकता होती है, उन्हें बनाना सीख जाएँ तथा अक्षरों को मौखिक रूप से बता सकें। बच्चों पर किसी प्रकार का दबाव न डालें।
- बाएँ हाथ से लिखने वाले बच्चों पर दाएँ हाथ से लिखने के लिए ज़ोर न डालें। वर्कशीट को सही दिशा में रख कर कार्य करने में सहायता करें एवं कार्य करते समय सही स्थिति में बैठने को कहें।
- एक क्रिया को सफलतापूर्वक पूर्ण करने में बच्चों की सहायता करें।
- इन वर्कशीट्स के अतिरिक्त बच्चों को स्लेट, कागज़ एवं अनेक स्केच पेन, क्रेयॉन एवं मार्कर आदि भी उपलब्ध कराएँ।

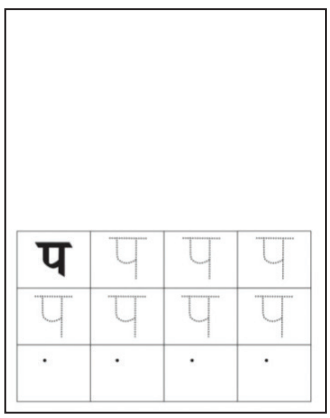

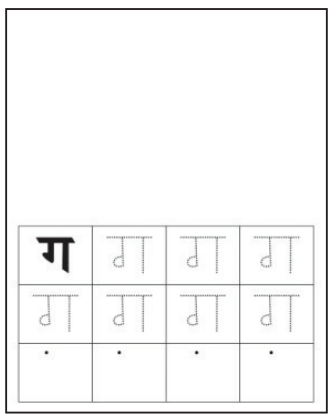

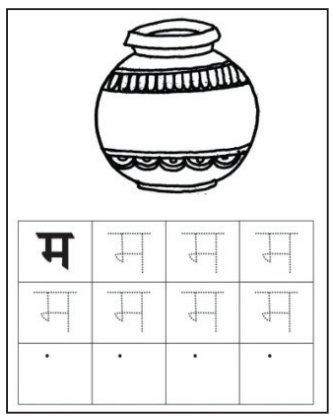

आओ मिलान करें

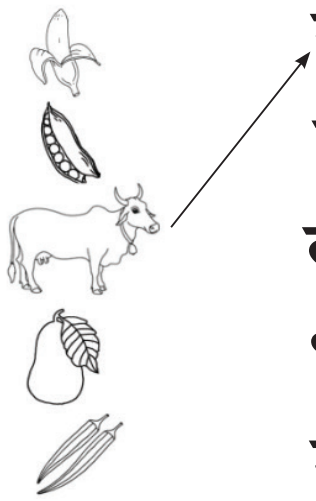

- औपचारिक रूप से लिखना एवं पढ़ना प्राथमिक कक्षा एक में ही आरंभ करना चाहिए। जब बच्चे उसके लिए तैयार हों, न कि पूर्व प्राथमिक कक्षाओं में।
- बच्चों को पुस्तक ठीक प्रकार से पकड़ने में, पृष्ठ पलटने में सहायता करें। क्रियाएँ बाईं से दाईं दिशा में करवाएँ, जोकि भविष्य में पढ़ने में महत्वपूर्ण होंगी।
- मौखिक और लिखित भाषा के लिए अनेक अवसर प्रदान करें।

वर्कशीट के माध्यम से बच्चों का आकलन भी किया जा सकता है कि बच्चे सीख रहे हैं या नहीं।

वर्कशीट घर के लिए भी दी जा सकती है। ये सारी वर्कशीट शिक्षक और माता-पिता व अभिभावकों को सँभाल कर रखनी चाहिए। बच्चों के पोर्टफ़ोलियो में इससे यह फायदा होता है कि बच्चों के सीखने में क्या सुधार हो रहा है इन वर्कशीट के माध्यम से देखा जा सकता है। इनमें से कुछ नमूने यदि माता-पिता सँभाल कर रखें और जब बच्चे बड़े हो जाएँ तो उन्हें दिखाएँ। जब वे इन वर्कशीट को पलट कर देखेंगे तो उन्हें बहुत अच्छा लगेगा। वर्कशीट रंग-बिरंगी भी हो सकती है,

आओ सही पर चिह्न लगाएँ

ग (क) ख	घ क ग
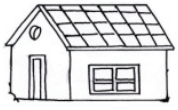	
घ ख ग	च क ख

आओ सही पर चिह्न लगाएँ

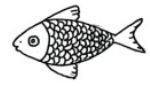	
भ ग म	फ ब प
	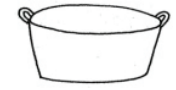
न ग ल	ट न ढ

लेकिन काली सफ़ेद होने से बच्चों को रंग भरने का या सजाने का अवसर मिलता है।

निष्कर्ष

वर्कशीट्स बच्चों को सीखने में बहुत मदद करती हैं। इन्हें बहुत ध्यान से बनाना चाहिए। साथ ही इनका प्रयोग भी बहुत ध्यान से करना चाहिए। वर्कशीट्स रंग-बिरंगी और काली सफ़ेद, दोनों तरह की हो सकती हैं। यह बच्चों की आयु और रुचि के अनुसार होनी चाहिए। वर्कशीट्स बच्चों को पठनपूर्व तैयारी कराने में सहायक सिद्ध हो सकती हैं। इनका प्रयोग शिक्षकों के साथ-साथ अभिभावकों द्वारा भी किया जा सकता है। इनका प्रयोग घर और स्कूल दोनों में किया जा सकता है। वर्कशीट को एक शीर्षक दिया जा सकता है। एक ही शीट पर अनेक क्रियाएँ करने के अवसर मिलने चाहिए। निर्देश सही दिए जाने चाहिए। वर्कशीट में चित्र भी होने चाहिए या फिर चित्र बनाने/सजाने के अवसर होने चाहिए। कार्य करने के लिए उचित जगह होनी चाहिए। अभ्यास के लिए अवसर होने चाहिए। वर्कशीट ऐसी होनी चाहिए, जो बच्चों को सीखने के लिए प्रोत्साहित करे। वर्कशीट्स के अतिरिक्त बच्चों को स्लेट, कागज़ एवं अनेक स्केच पेन, क्रेयॉन एवं मार्कर आदि भी उपलब्ध कराएँ। बच्चों की वर्कशीट पर उनका नाम ज़रूर लिखें तथा कक्षा में उनके काम को प्रदर्शित भी करें, ताकि वे अपने काम को निहार सकें। बच्चे अपने काम को देख कर बहुत खुश होते हैं तथा साथ ही दूसरों के काम को देख कर बहुत कुछ सीखते हैं।